गुप्त कलीसिया–7
स्वर्गदूत, दुष्टात्माएं तथा आत्मिक युद्ध
डॉ. डेविड प्लॉट

Part 1

गुप्त कलीसिया
स्वर्गदूत, दुष्टात्माएं तथा आत्मिक युद्ध

हम कौन हैं...

विनम्रतापूर्वक– सचेत होकर प्रार्थना करते हुए– मैं अपने महान परमेश्वर का वचन आपको सुनाता हूं। उसका वचन और वचन का अध्ययन उसकी आराधना को प्रज्वलित करती है। हम अब वचन के माध्यम से आराधना करेंगे। हमारी सहभागिता का उद्देश्य स्वर्गदूत, दुष्टात्माएं तथा आत्मिक युद्ध के अध्ययन से कहीं अधिक गंभीर है।

मैं चाहता हूं कि आप आरंभ ही से समझ लें कि यह कोई खेल नहीं है। संसार में स्त्री–पुरुषों, छोटे लड़के–लड़कियों की आत्माओं के लिए वास्तविक युद्ध चल रहा है और इस युद्ध में जान का खतरा बहुत अधिक है, किसी भी युद्ध से जो संसार में आज तक लड़ा गया और कभी लड़ा जाएगा। 2 कुरिन्थियों 4:4–6 में लिखा है, "और उन अविश्वासियों के लिये, जिन की बुद्धि को इस संसार के ईश्वर ने अंधी कर दी है, ताकि मसीह जो परमेश्वर का प्रतिरूप है, उसके तेजोमय सुसमाचार का प्रकाश उन पर न चमके। क्योंकि हम अपने को नहीं, परन्तु मसीह यीशु को प्रचार करते हैं कि वह प्रभु है; और उसके विषय में यह कहते हैं कि हम यीशु के कारण तुम्हारे सेवक हैं। इसलिये कि परमेश्वर ही है, जिसने कहा, "अन्धकार में से ज्योति चमके," और वही हमारे हृदयों में चमका कि परमेश्वर की महिमा की पहिचान की ज्योति यीशु मसीह के चेहरे से प्रकाशमान हो।"

अध्ययन के आरंभ ही से मैं चाहता हूं कि आप इस बाइबल अंश के महत्व पर मनन करें। हमारे मन में ज्योति जलानेवाले स्वर्ग और पृथ्वी के परमेश्वर और इस संसार के सरदार के मध्य युद्ध हो रहा है। इस संसार का सरदार अविश्वासियों के मन को अन्धा बनाता है। मैं आशा करता हूं कि आप इस बात को समझते हैं। एक सच्चा ज्योति का परमेश्वर है जो चाहता है कि संसार में सब मनुष्यों का उद्धार हो परन्तु

इस अन्धकार के युग का एक झूठा ईश्वर है जो चाहता है कि संसार के सब जन और आप भी नरक की आग में जलें। आप और मैं इसके ठीक मध्य में हैं– पद 5– मसीह का प्रचार।

यहां हमें निश्चित करना है कि हम कौन हैं। 1940 के दशक के उत्तरकाल में अमरीका ने रु 1100 करोड़ का सैनिक जहाज़, एस. एस. यूनाइटेड स्टेट्स बनाया था जो 15,000 सैनिक लेकर चल सकता था। यह संसार का सबसे तेज़ चलनेवाला और विश्वासयोग्य जहाज़ था। उसे 15,000 कि.मी. तक न तो तेल की आवश्यकता पड़ती थी और न ही अन्य किसी समान की। वह संसार के किसी भी कोने में 10 दिन के भीतर पहुंच जाता था परन्तु वह कभी सैनिक लेकर नहीं चला।

उसे एक बार क्यूबा के मिसाइल संकट के लिए रक्षा हेतु रखा गया था परन्तु अमरीकन नौसेना में अपनी संपूर्ण क्षमता में कभी काम नहीं आया। आज वह राष्ट्रपतियों, राज्य प्रमुखों, और प्रसिद्ध व्यक्तियों के लिए रागरंग का जहाज़ है। उसमें 15,000 सैनिक समाते थे परन्तु अब विलास वस्तु होने के कारण वह केवल 2000 यात्री लेकर चलता है जो उसके 695 भव्य कक्ष, 4 भोजनकक्ष, 3 मधुशाला, 2 सिनेमाघर, 5 एकड़ की खुली छत जिसमें एक गर्म पानी का तरणताल, 19 लिफ्ट और संसार के पहले पूर्व वातानुकूल जहाज़ का आनन्द ले सकते हैं। वह जहाज़ युद्ध की अपेक्षा धनवानों के लिए जो महासागर में शान्तिपूर्वक घूमना चाहते हैं, उनके लिए भोग विलास का साधन बन गया है।

एक मुख्य प्रश्न...

मुझ पूरा विश्वास है कि हमें आज कलीसिया में एक मुख्य प्रश्न पूछना है , "हम कलीसिया रूप में आज युद्धपोत हैं या विलासिता का जहाज़?" क्योंकि युद्धपोत विलासिता के जहाज़ की तुलना में गंभीर रूप से भिन्न होता है।

गंभीर अन्तर...

कुछ अन्तर है जो गंभीर है। हमारा आचरण भिन्न होगा। युद्ध के सैनिकों के चेहरे विलासिता में लीन मनुष्यों से सर्वथा भिन्न होते हैं। हमारे संसाधन भी सर्वथा भिन्न होंगे। युद्धपोत पर संसाधनों का परिरक्षण विलासिता के जहाज़ की स्वच्छंद बहुतायत के विपरीत हैं और हमारी चाल भी भिन्न है। युद्धपोत की चाल

विलासिता के जहाज़ की चाल से कहीं अधिक होती है क्योंकि उसे अपना काम पूरा करना होता है जबकि विलासिता का जहाज़ मनमौजी चाल से चलता है।

एक गंभीर निर्णय...

मुझे पूरा विश्वास है कि आज हम कलीसिया को एक विलासिता के जहाज़ के तुल्य समझते हैं। कलीसिया मेरी सुविधा, मेरी मन की इच्छा, मेरी लालसाओं के लिए है और हमने हमारे चारों ओर चल रहे अनन्त युद्ध को ध्यान से हटा दिया है। अतः हम कलीसिया को एक गंभीर निर्णय लेना है। क्या हम इस संसार की शान्तिदायक सुख सुविधा का आनन्द लेना चाहता हैं? या हम संसार में मनुष्यों के हित में युद्ध करेंगे? मुझे पूरा विश्वास है कि यह प्रश्न हमारी कलीसिया के सामने है।

मैं आपको युद्धपोत पर सवार होने के लिए और बैरी को हराने तथा राज्य के सुसमाचार को पृथ्वी की छोर तक ले जाने के लिए बुलाना चाहता हूं, चाहे आपको कुछ भी खाना पड़े। हमारा अध्ययन यही है। गुप्त कलीसिया विलासिता के जहाज़ की सामग्री नहीं है। यह अध्ययन हमारी सुविधा के निमित्त नहीं है। यह मनुष्यों की एक देह को संपन्न करने के लिए है कि वे जानें कि वे मसीह में क्या हैं न कि मनोरंजन करें अपितु यह जानें कि मसीह के साथ जयवन्त जीवन कैसे जीएं।

यही नहीं कि आप जय का अनुभव करें वरन् आप सब जातियों को जय दिलाएं कि वे राज्य के सुसमाचार को जानें जिसका हम सब विश्वव्यापी विश्वासी उत्सव मनाते हैं कि वे उस महान परमेश्वर को जानें जिसकी हम स्तुति गाते हैं। अतः आप टिप्पणियां लिखते चलें। यह आपके अपने लिए और आपकी जानकारी के लिए नहीं है वरन् स्वर्गदूतों, दुष्टात्माओं और आत्मिक युद्ध से संबन्धित वचन अपने साथ सर्वत्र ले जाएं और परमेश्वर आपको जिस पृष्ठभूमि में रखे उसमें इसकी शिक्षा दें।

मैं आपको स्वर्गदूतों, दुष्टात्माओं और आत्मिक युद्ध के विषय यथासंभव वरन् अधिक से अधिक जानकारी देना चाहता हूं। हमारा लक्ष्य यह नहीं कि आप कहें, "अध्ययन अच्छा था," परन्तु संपूर्ण विश्व के लोग मसीह की महिमा के लिए जाति जाति में बैरी को पराजित करने के लिए संपन्न हों। तो आप तैयार हैं? चलो, आगे बढ़ते हैं।

हम कहां जा रहे हैं...

मैं चाहता हूं कि हम कुछ आधारभूत तथ्यों पर ध्यान दें जो हमारे अध्ययन में हर बात का आधार होंगे। हम तीन खण्डों में अध्ययन करेंगेः (1) स्वर्गदूत– वे कौन हैं? उनकी व्यवस्था क्या है? वे क्या करते हैं? वे हमसे कैसे संपर्क करते हैं? (2) दुष्टात्मा–दुष्टात्मा क्या है? शैतान कौन है? शैतान और दुष्टात्माओं का परमेश्वर से क्या संबन्ध है? शैतान और दुष्टात्माओं का हमसे क्या संबन्ध है? (3) आत्मिक युद्ध– हम उद्धार के इतिहास के तीन प्रमुख अंश देखेंगेः पुराना नियम, सुसमाचारों में मसीह का वर्णन और पत्रियों में कलीसिया। अन्त में हम विवादास्पद प्रश्न देखेंगे। मुक्ति, सेवा, दुष्टात्माएं निकालना क्या है? क्या एक विश्वासी में दुष्टात्मा प्रवेश कर सकता है? क्या हमें दुष्टात्माओं से बात करना चाहिए? उनसे बात करना, उन्हें नाम देना, उन्हें बान्धना आदि। क्या हम अन्य स्थानों और लोगों से दुष्टात्माग्रस्त हो सकते हैं? हम दो चुनौतियों के साथ समाप्त करेंगे जो मुझे अभिभूत करती हैं।

आधारभूत तथ्य

एक आत्मिक संसार है।

पहला आधारभूत तथ्य एक आत्मिक संसार है। 2 राजाओं अध्याय 6 खोलें। हम बाइबल के विभिन्न संदर्भ देखेंगे जिन पर हम ध्यान देंगे। 2 राजाओं 6 में एलीशा एक भविष्यद्वक्ता है जिसे परमेश्वर का जन कहा गया है– 2 राजाओं 6:8–10,

भविष्यद्वक्ता एलीशा, परमेश्वर का जनः

"अराम का राजा इस्राएल से युद्ध कर रहा था, और सम्मति करके अपने कर्मचारियों से कहा, "अमुक स्थान पर मेरी छावनी होगी।" तब परमेश्वर के भक्त ने इस्राएल के राजा के पास कहला भेजा, "चौकसी कर और अमुक स्थान से होकर न जाना, क्योंकि वहां अरामी चढ़ाई करनेवाले हैं।" तब इस्राएल के राजा ने उस स्थान को, जिसकी चर्चा करके परमेश्वर के भक्त ने उसे चिताया था, दूत भेजकर अपनी रक्षा की; और उस प्रकार एक दो बार नहीं वरन् बहुत बार हुआ।"

सीरिया का राजा इस्राएल पर आक्रमण करना चाहता था परन्तु परमेश्वर एलीशा को उसकी गतिविधियों की जानकारी देता था और एलीशा इस्राएल के राजा को सचेत कर देता है, "अराम की सेना वहां है।"

सीरिया का राजा इस बात से अप्रसन्न था– 2 राजा 6:11, "इस कारण अराम के राजा का मन बहुत घबरा गया; उसने अपने कर्मचारियों को बुलाकर उनसे पूछा, "क्या तुम मुझे न बताओगे कि हम लोगों में से कौन इस्राएल के राजा की ओर का है?" उसके एक कर्मचारी ने कहा, "हे मेरे प्रभु! हे राजा! ऐसा नहीं।"

दूसरे शब्दों में, यहां विश्वासघाती कौन है? 2 राजा 6:12, उन्होंने सीरिया के राजा को बताया कि वह उसकी एक एक बात जानता है। अतः वह एलीशा को पकड़ने के लिए सैनिक भेजता है कि उसे घात करें– 2 राजा 6:13–14, "राजा ने कहा, "जाकर देखो कि वह कहां है, तब मैं भेजकर उसे पकड़वा मंगाऊंगा।" उसको यह समाचार मिलाः "वह दोतान में है।" तब उसने वहां घोड़ों और रथों समेत एक भारी दल भेजा, और उन्होंने रात को आकर नगर को घेर लिया।"

सेना ने आकर उन्हें घेर लिया। तब क्या हुआ? 2 राजा 6:15, "भोर को परमेश्वर के भक्त का टहलुआ उठा और निकलकर क्या देखता है कि घोड़ों और रथों समेत एक दल नगर को घेरे हुए खड़ा है। तब उसके सेवक ने उससे कहा, "हाय! मेरे स्वामी, हम क्या करें?"

एलीशा का सेवक डर गया। एलीशा कहता है– 2 राजा 6:16, "उसने कहा, "मत डर; क्योंकि जो हमारी ओर हैं, वह उन से अधिक हैं, जो उनकी ओर हैं।"

यह बड़ी रोच प्रतिक्रिया है– जो हमारे साथ हैं वे इनसे अधिक हैं। क्या होता है? 2 राजा 6:17, "तब एलीशा ने यह प्रार्थना की, "हे यहोवा, इसकी आंखें खोल दे कि यह देख सके।" तब यहोवा ने सेवक की आंखें खोल दीं, और जब वह देख सका, तब क्या देखा कि एलीशा के चारों ओर का पहाड़ अग्निमय घोड़ों और रथों से भरा हुआ है।"

उसकी आंखें खुल गईं और उसने देखा कि परमेश्वर की सेना सीरिया के सैनिकों को घेरे खड़ी है। वह उनसे अधिक थी– 2 राजा 6:18–21, "जब अरामी उसके पास आए, तब एलीशा ने यहोवा से प्रार्थना की कि इस दल को अंधा कर डाल। एलीशा के इस वचन के अनुसार उसने उन्हें अंधा कर दिया। तब एलीशा ने उनसे कहा, "यह तो मार्ग नहीं है, और न यह नगर है, मेरे पीछे हो लो; मैं तुम्हें उस मनुष्य के पास जिसे तुम ढूंढ़ रहे हो पहुंचाऊंगा।" तब उसने उन्हें शोमरोन को पहुंचा दिया। जब वे शोमरोन में आ गए, तब एलीशा ने कहा, "हे यहोवा, इन लोगों की आंखें खोल कि देख सकें।" तब यहोवा ने उनकी आंखें

खोलीं, और जब वे देखने लगे तब क्या देखा कि हम शोमरोन के मध्य में हैं। उनको देखकर इस्राएल के राजा ने एलीशा से कहा, "हे मेरे पिता, क्या मैं इनको मार लूं? मैं इनको मार लूं?"

एलीशा उन्हें इस्राएल के राजा के पास ले गया। मेरा उद्देश्य यहां यह है कि हम देखें हम एलीशा के सेवक के समान हैं। हमें आत्मिक संसार की गतिविधियां दिखाई नहीं देती हैं। वह संसार हमारे संसार से कहीं अधिक सामर्थी है। असंख्य स्वर्गदूत हैं– अच्छे और बुरे। ज़रा सोचें! यदि हम पवित्र स्वर्गदूतों को देखें तो उनकी सुन्दरता से मंत्रमुग्ध हो जाएंगे और दुष्टात्माओं को देखकर कांपने लगेंगे। परमेश्वर हमारी आंखें खोले कि आत्मिक संसार को देखें।

यहां आपत्ति उठाई जाती है कि आत्मिक बातें पुरानी हो गई हैं, "क्या आप नहीं जानते कि विज्ञान, तकनीकी, आयुर्विज्ञान ने आत्मिक बातों को भ्रम सिद्ध कर दिया है।" यह ऐसा है जैसे **असगर,** परियों आदि में विश्वास करना। यदि दिखता नहीं तो उसे स्पर्श करें, सूंघें, वह है ही नहीं।

आप कैसे कहेंगे कि परमेश्वर गरजन और बिजली को नियन्त्रित करता है। मौसम विभाग भी तो पहले से ही बता देता है। पाप की परीक्षा लानेवाली शक्ति कौन है? पाप तो हमारे अनुवंश और समाज का उत्पाद है। हम क्या करेंगे उसका भी पूर्वानुमान लगाया जा सकता है। तो आप इन बातों में कैसे विश्वास करेंगे?

स्वर्गदूत और दुष्टात्माओं को धार्मिक अन्धविश्वास माना जाता है। सी. एस. लूईस की एक पुस्तक में बड़ी दुष्टात्मा छोटी दुष्टात्मा को परामर्श देता है कि मनुष्य को कैसे धोखा दें: "मेरे विचार में तुझे रोगी को अन्धकार में रखने में अधिक कठिनाई नहीं होगी। आज लोग दुष्टात्माओं को हंसी की बात मानते हैं, इससे तुझे सहायता मिलेगी। यदि उसके मन में तेरी वास्तविकता का सन्देह होने लगे तो उसे किसी लाल बत्ति में दिखनेवाले चित्र का उदाहरण देना और उसे विवश करना कि वह उस पर विश्वास नहीं कर सकता तो मुझ में भी विश्वास नहीं करे।"

आज की सभ्यता हमें आत्माओं के विषय बात करने वरन् सोचने से भी दूर करती हैं, "क्या यह निर्बुद्धि की बात नहीं? क्या यह हमारी कल्पना नहीं? आत्मिक बातें, अतः पुरानी हो गई हैं। आत्मिक सच्चाईयां सर्वव्यापी नहीं हैं। हम आत्मिक संसार को दिवंगत आत्माओं या तन्त्रमन्त्र तक ही सोचते हैं।"

ऐसी मानसिकता अत्यधिक हानिकारक है। इस तथ्य को न मानना कि आत्मिक युद्ध का प्रभाव टी.वी, सिनेमा, पत्नियों के साथ पति का व्यवहार, बच्चों के साथ माता–पिता का व्यवहार, हमारे दैनिक जीवन, हमारे पैसों के उपयोग पर प्रभाव डालता है। यदि हम आत्माओं को मानें भी तो हम उन्हें अपने संसार से अलग रखते हैं।

हम समझ नहीं पाते कि हमारी राजनीति, हमारे व्यापार, हमारे पड़ोस, हमारे घर और हमारे प्रत्येक काम में हस्तक्षेप करता है। सच तो यह है कि हमारी मिशन सेवाओं के द्वारा ही हमने यह विचार संसार में बांटा है। लेज़ली न्यूबिगिन ने कहा है, "मसीही सेवक संसार में सबसे अधिक सांसारिकता लानेवाले बल हैं।" हमने उन्हें समझाया कि उनके धर्म का संबन्ध उनकी खेती से नहीं है और उन्हें **उर्वरक** तथा अच्छे बीज दिए, कीटनाशक दिए जबकि हमें उनसे कहना था कि परमेश्वर संसार का सृजनहार एवं पालनहार है। उसने संसार के लिए नियम बनाए हैं और हम उसके वरदानों के पात्र हैं। हम उसकी खोज करके उसके नियमों के अनुसार काम करते हैं परन्तु हमने इन दोनों को एक दूसरे से अलग कर दिया है। इसका परिणाम यह हुआ कि मनुष्य अपने दैनिक जीवन में परमेश्वर का हाथ नहीं देखता है। हम पाप को भी मनोवैज्ञानिक समस्या बताकर सामाजिक वातावरण पर दोष डालते हैं। अतः हम आत्मिक संसार पर ध्यान नहीं देते जो हमारे चारों ओर है।

कुछ लोग तो यहां तक कहते हैं कि आत्मिक शक्तियां धर्मशास्त्र में भी व्याप्त हैं परन्तु मैं आपको बताना चाहता हूं कि संपूर्ण धर्मशास्त्र में आत्मिक शक्तियां सक्रिय हैं। आरंभ ही में देखें, उत्पत्ति 3:1, "यहोवा परमेश्वर ने जितने बनैले पशु बनाए थे, उन सब में सर्प धूर्त था; और उसने स्त्री से कहा, "क्या सच है कि परमेश्वर ने कहा, 'तुम इस वाटिका के किसी वृक्ष का फल न खाना'?"

प्रभु यीशु को आत्मा जंगल में ले गया कि उसकी परीक्षा हो– मत्ती 4:1, "तब आत्मा यीशु को जंगल में ले गया ताकि इब्लीस से उस की परीक्षा हो।"

प्रकाशितवाक्य 20:7–10 में शैतान को दण्ड के बारे में लिखा हुआ है, "जब हजार वर्ष पूरे हो चुकेंगे तो शैतान कैद से छोड़ दिया जाएगा। वह उन जातियों को जो पृथ्वी के चारों ओर होंगी, अर्थात् गोग और मागोग को जिनकी गिनती समुद्र की बालू के बराबर होगी, भरमाकर लड़ाई के लिये इकट्ठे करने को निकलेगा। वे सारी पृथ्वी पर फैल कर पवित्र लोगों की छावनी और प्रिय नगर को घेर लेंगीः और आग स्वर्ग से उतरकर उन्हें भस्म करेगी। उन का भरमानेवाला शैतान आग और गन्धक की उस झील में, जिसमें

वह पशु और झूठा भविष्यद्वक्ता भी होगा, डाल दिया जाएगा; और वे रात दिन युगानुयुग पीड़ा में तड़पते रहेंगे।"

आप सुनिश्चित करें कि आप इसे समझ रहे हैं। यदि आप आत्माओं में विश्वास नहीं करते हैं तो आप बाइबल के सत्य से इन्कार करते हैं वरन् आप तो प्रभु यीशु की सत्यता का ही इन्कार करते हैं। प्रभु यीशु तो आरंभ ही से आत्मिक संसार से संबन्धित था। स्वर्गदूत ने उसके जन्म की सूचना पहले ही से दे दी थी। मत्ती 4 और लूका 4 में शैतान ने प्रभु यीशु की परीक्षा ली थी। परीक्षा में जयवन्त होने के बाद स्वर्गदूत उसकी सेवा के लिए उतर आए थे। उसने कहा था कि वह स्वर्गदूतों की सेना बुला सकता है। उसकी कब्र का पत्थर हटाने के बाद स्वर्गदूत वहां बैठा था, उसके स्वर्गारोहण के समय स्वर्गदूत उसके साथ थे। आत्मिक संसार की वास्तविकता को स्वीकार न करने का अर्थ है, प्रभु यीशु के जन्म, जीवन, पुनरुत्थान तथा स्वर्गारोहण का इन्कार करना।

इसका अर्थ है कि आत्माएं सर्वव्यापी हैं। यहां हमें दो गलतियों से बचना है जिनका उल्लेख सी. एस. लूईस करते हैं, "शैतान के विषय हमारी जाति दो समतुल्य वरन् विपरीत गलतियां कर सकती हैं। एक है उनके अस्तित्व में विश्वास न करना और दूसरी है, उनमें विश्वास करके अनुचित और हानिकारक व्यवहार में पड़ना। वे इन दोनों गलतियों से ही अति प्रसन्न होती हैं और भौतिकवादी या जादूगर दोनों ही की सहर्ष प्रशंसा करती हैं।"

पहली गलती है निस्सार तर्क अर्थात आत्माओं को धार्मिक कल्पना मानना या उन्हें अलग विषय मानकर अनदेखा कर देना। दूसरी ओर मतान्धता है। यदि हम सावधान न रहें तो उनको आवश्यकता से अधिक महत्व देकर हर प्रकार के भ्रम और अवधारणाओं में पड़ जाएंगे।

मैं ने इस विषय पर महीनों अध्ययन किया है और मैं ईमानदारी से कहता हूं कि मसीही क्षेत्र में आत्मिक युद्ध के विषय तरह तरह की कल्पनाएं, अन्धविश्वास, निराधार विचार, बेमानी बातें और भ्रम हैं। निश्चय ही हमें निस्सार तर्क में नहीं पड़ना है परन्तु मतान्धता की अति भी नहीं करना है।

आत्मिक युद्ध से संबन्धित डेविड पाऊलिसन ने परामर्श पर एक अति उत्तम पुस्तक लिखी है। वह लिखते हैं कि एक पति–पत्नी में झगड़ा होता है तो वे एक दूसरे में से दुष्टात्माएं निकालने का प्रयास करते हैं। वह कहते हैं कि विवाहित दम्पत्ति एक दूसरे के प्रति **वैमनस्था** के साथ प्रभु यीशु का नाम अन्धविश्वास,

बैरभाव, भय और उलझन के कीचड़ से गंदा करता है। शैतान जो परमेश्वर का अपमान करना चाहता है, वह हमें अपने मार्गों में चलाना चाहता है, इस परिस्थिति द्वारा व्यक्तिगत और पारस्परिक क्षति पहुंचा कर प्रसन्न ही होता है।

मैं इस अध्ययन को गंभीरता से लेना चाहता हूं क्योंकि आत्मिक युद्ध के विषय विश्वव्यापी कलीसिया में भ्रान्ति फैली हुई है। हमें इन दोनों गलतियों से या कहें दोनों सीमाओं से सावधान रहना है। हम आत्मिक युद्ध में हैं।

आधारभूत सत्य सं० एकः एक आत्मिक संसार है। सं० 2, हम आत्मिक युद्ध के मध्य हैं, इफिसियों 6:12, "क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध लहू और मांस से नहीं परन्तु प्रधानों से, और अधिकारियों से, और इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं।"

हमारा यह युद्ध मांस और लहू का नहीं है।

यह युद्ध दो परस्पर विरोधी राज्यों के मध्य है। हम 2 कुरिन्थियों 4:4 देख चुके हैं, "और उन अविश्वासियों के लिये, जिन की बुद्धि को इस संसार के ईश्वर ने अंधी कर दी है, ताकि मसीह जो परमेश्वर का प्रतिरूप है, उसके तेजोमय सुसमाचार का प्रकाश उन पर न चमके।"

यहां परमेश्वर के राज्य और शैतान के राज्य का उल्लेख किया गया है। प्रभु यीशु कहता है कि उसका राज्य इस संसार का नहीं है– यूहन्ना 18:36, "यीशु ने उत्तर दिया, "मेरा राज्य इस संसार का नहीं; यदि मेरा राज्य इस संसार का होता, तो मेरे सेवक लड़ते कि मैं यहूदियों के हाथ सौंपा न जाताः परन्तु अब मेरा राज्य यहां का नहीं।"

इफिसियों 2 में आकाश के राज्य के सरदार की चर्चा है– इफिसियों 2:1–2, "उसने तुम्हें भी जिलाया, जो अपने अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थे जिनमें तुम पहले इस संसार की रीति पर, और आकाश के अधिकार के हाकिम अर्थात् उस आत्मा के अनुसार चलते थे, जो अब भी आज्ञा न माननेवालों में कार्य करता है।"

परमेश्वर का राज्य और अन्धकार का राज्य पड़ोसी राज्य हैं और इनमें तनाव बना रहता है।

इस तनाव की कहानी से इतिहास बना है। आरंभ ही से अर्थात मानवीय इतिहास के आरंभ ही से–उत्पत्ति 3 से ही इन दोनों राज्यों में युद्ध और मनुष्य के युद्ध एवं शान्ति का इतिहास है। अन्यजातियों में से जो आकाश के सरदार के राज्य, शैतान के अन्धकार के राज्य में हैं, परमेश्वर उनमें से मनुष्यों को बुलाता है कि उसके पास आकर अन्धकार में ज्योति बनें, तथापि उसके भक्तों में प्रचण्ड ज्योति भी ठोकर खाती है। अब्राहम भी छल करता है, झूठ बोलता है; मूसा अविश्वास से संघर्ष करता है और मर जाता है। नूह जो अपने युग का एकमात्र विश्वासी था, शराब के नशे में हो गया और मर गया। दाऊद जो परमेश्वर के मन का मनुष्य था व्यभिचार करके, हत्या करवाकर मर गया। आप बार बार देखते हैं कि परमेश्वर की प्रचण्ड ज्योतियां अन्धकारमय होती हैं।

एक सिद्ध मनुष्य है जिसमें कोई पाप नहीं। वह अपने जीवन से जय पाता है, अपनी मृत्यु द्वारा जय पाता है। वह अपने पुनरुत्थान द्वारा जय पाता है। वह हमें ज्योति का राज्य दिखाता है कि उसमें विश्वास रखनेवाले अन्धकार के राज्य से मुक्ति पाएं और उसके द्वारा ज्योति के राज्य में प्रवेश पाएं परन्तु उसके विश्वासियों में पुराना स्वभाव समाप्त नहीं होता परन्तु युद्ध करता है। एक दिन ऐसा आनेवाला है जब इस संसार का राज्य हमारे प्रभु यीशु का राज्य होगा और वह सदा के लिए राज्य करेगा परन्तु इस समय हम युद्ध के मध्य हैं– प्रकाशितवाक्य 11:15, "जब सातवें दूत ने तुरही फूंकी, तो स्वर्ग में इस विषय के बड़े बड़े शब्द होने लगेः "जगत का राज्य हमारे प्रभु का और उसके मसीह का हो गया, और वह युगानुयुग राज्य करेगा।"

यह एक अनवरत संघर्ष है। मैं चाहता हूं कि आप मेरे साथ विचार करें कि नया नियम मसीही जीवन को कैसे युद्ध कहता है। यह पाप के विरुद्ध युद्ध है, एक संघर्ष है– इब्रानियों 12:4, "तुम ने पाप से लड़ते हुए उससे ऐसी मुठभेड़ नहीं की कि तुम्हारा लहू बहा हो।"

यह हमारी आत्मा का युद्ध है। देखिए 1 पतरस 2:11, "हे प्रियो, मैं तुम से विनती करता हूं कि तुम अपने आप को परदेशी और यात्री जानकर उस सांसारिक अभिलाषाओं से जो आत्मा से युद्ध करती हैं, बचे रहो।"

यहूदा 3 में प्रेरित कहता है कि हमें अपने विश्वास का कैसा यत्न करना है, "हे प्रियो; जब मैं तुम्हें उस उद्धार के विषय में लिखने में अत्यन्त परिश्रम से प्रयत्न कर रहा था जिसमें हम सब सहभागी हैं, तो मैं ने

तुम्हें यह समझाना आवश्यक जाना कि उस विश्वास के लिये पूरा यत्न करो जो पवित्र लोगों को एक ही बार सौंपा गया था।"

हमें अपने विश्वास के लिए संघर्ष करना है, सुसमाचार के प्रति यत्न करना है।

फिलिप्पियों 1:27–30, "केवल इतना करो कि तुम्हारा चाल–चलन मसीह के सुसमाचार के योग्य हो कि चाहे मैं आकर तुम्हें देखूं, चाहे न भी आऊं, तुम्हारे विषय में यही सुनूं कि तुम एक ही आत्मा में स्थिर हो, और एक चित्त होकर सुसमाचार के विश्वास के लिये परिश्रम करते रहते हो, और किसी बात में विरोधियों से भय नहीं खाते। यह उनके लिये विनाश का स्पष्ट चिन्ह है, परन्तु तुम्हारे लिये उद्धार का और यह परमेश्वर की ओर से है। क्योंकि मसीह के कारण तुम पर यह अनुग्रह हुआ कि न केवल उस पर विश्वास करो पर उसके लिये दुःख भी उठाओ; और तुम्हें वैसा ही परिश्रम करना है, जैसा तुम ने मुझे करते देखा है, और अब भी सुनते हो, कि मैं वैसा ही करता हूं।"

पौलुस कहता है, हम अच्छी कुश्ती लड़ते हैं– 1 तीमुथियुस 6:12, "विश्वास की अच्छी कुश्ती लड़; और उस अनन्त जीवन को धर ले, जिसके लिये तू बुलाया गया और बहुत गवाहों के सामने अच्छा अंगीकार किया था।"

अपने जीवन और अपनी सेवा के अन्त में वह कहता है– 2 तीमुथियुस 4 में वह कहता है कि उसने अच्छी कुश्ती लड़ी है और अपनी दौड़ पूरी कर ली है। उसने विश्वास की रखवाली की थी। और वह नये नियम के विश्वासियों से कहता है कि हम योद्धा हैं– 2 तीमुथियुस 2:3–4, "मसीह यीशु के अच्छे योद्धा के समान मेरे साथ दुःख उठा। जब कोई योद्धा लड़ाई पर जाता है, तो इसलिये कि अपने भरती करनेवाले को प्रसन्न करे, अपने आप को संसार के कामों में नहीं फंसाता।"

नया नियम हमारे हथियारों की चर्चा करता है। ये हथियार सांसारिक नहीं हैं जिनमें वह कहता है धार्मिकता के हथियार, सीधे हाथ में और उल्टे हाथ में– 2 कुरिन्थियों 6:4–10, "परन्तु हर बात में परमेश्वर के सेवकों के समान अपने सद्‌गुणों को प्रगट करते हैं, बड़े धैर्य से, क्लेशों से, दरिद्रता से, संकटों से, कोड़े खाने से, कैद होने से, हुल्लड़ों से, परिश्रम से, जागते रहने से, उपवास करने से, पवित्रता से, ज्ञान से, धीरज से, कृपालुता से, पवित्र आत्मा से, सच्चे प्रेम से, सत्य के वचन से, परमेश्वर की सामर्थ्य से, धार्मिकता के हथियारों से जो दाहिने–बाएं हाथों में हैं, आदर और निरादर से, दुर्नाम और सुनाम से। यद्यपि

भरमानेवालों के जैसे मालूम होते हैं तौभी सच्चे हैं; अनजानों के सदृश्य हैं, तौभी प्रसिद्ध हैं; मरते हुओं के समान हैं और देखो जीवित हैं; मारखानेवालों के सदृश हैं परन्तु प्राण से मारे नहीं जाते; शोक करनेवालों के समान हैं, परन्तु सर्वदा आनन्द करते हैं; कंगालों के समान हैं, परन्तु बहुतों को धनवान बना देते हैं; ऐसे हैं जैसे हमारे पास कुछ नहीं तौभी सब कुछ रखते हैं।"

पुराने नियम में– दानिय्येल 10:12–15 में दानिय्येल की प्रार्थना स्वर्ग में स्वर्गदूतों के मध्य युद्ध की स्थिति उत्पन्न करती है।

"फिर उसने मुझ से कहा, "हे दानिय्येल, मत डर, क्योंकि पहले ही दिन को जब तू ने समझने–बूझने के लिये मन लगाया और अपने परमेश्वर के सामने अपने को दीन किया, उसी दिन तेरे वचन सुने गए, और मैं तेरे वचनों के कारण आ गया हूं। फारस के राज्य का प्रधान इक्कीस दिन तक मेरा सामना किए रहा; परन्तु मीकाएल जो मुख्य प्रधानों में से है, वह मेरी सहायता के लिये आया, इसलिये मैं फारस के राजाओं के पास रहा, और जब मैं तुझे समझाने आया हूं, कि अन्त के दिनों में तेरे लोगों की क्या दशा होगी। क्योंकि जो दर्शन तू ने देखा है वह कुछ दिनों के बाद पूरा होगा।" जब वह पुरुष मुझ से ऐसी बातें कह चुका, तब मैं ने भूमि की ओर मुंह किया और चुप रह गया।"

मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि हम युद्ध में हैं शान्ति में नहीं हम बार बार पौलुस की एक चितौनी को देखेंगे, "हमारा यह युद्ध" यह शारीरिक नहीं आत्मिक है। पौलुस को पत्थरवाह किया गया, सताया गया, कोड़े मारे गए, उसके साथ दुर्व्यवहार किया गया, जेल में डाला गया, उसका जहाज़ टूटा। पौलुस से अधिक शारीरिक यात्ना को कौन जान सकता है परन्तु वह कहता है, इफिसियों 6, "इसलिये प्रभु में और उसकी शक्ति के प्रभाव में बलवन्त बनो। परमेश्वर के सारे हथियार बांध लो कि तुम शैतान की युक्तियों के सामने खड़े रह सको। क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध लहू और मांस से नहीं परन्तु प्रधानों से, और अधिकारियों से, और इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं। इसलिये परमेश्वर के सारे हथियार बांध लो, कि तुम बुरे दिन में सामना कर सको, और सब कुछ पूरा करके स्थिर रह सको। इसलिये सत्य से अपनी कमर कसकर, और धार्मीकता की झिलम पहिन कर, और पांवों में मेल के सुसमाचार की तैयारी के जूते पहिन कर; और इन सब के साथ विश्वास की ढाल लेकर स्थिर रहो जिससे तुम उस दुष्ट के सब जलते हुए तीरों को बुझा सको। और उद्धार का टोप, और आत्मा की तलवार, जो परमेश्वर का वचन है, ले लो। हर समय और हर प्रकार से आत्मा में प्रार्थना, और विनती करते रहो, और इसी लिये जागते रहो कि सब पवित्र लोगों के लिये लगातार विनती किया करो,

और मेरे लिये भी कि मुझे बोलने के समय ऐसा प्रबल वचन दिया जाए कि मैं साहस से सुसमाचार का भेद बता सकूं, जिसके लिये मैं जंजीर से जकड़ा हुआ राजदूत हूं; और यह भी कि मैं उसके विषय में जैसा मुझे चाहिए साहस से बोलूं।"

आत्मिक युद्ध, सांसारिक परिक्षेत्र से कहीं अधिक घोर, अर्थपूर्ण, प्रभावी होता है। आपका शत्रु आपके विवाहित जीवन को नष्ट करना चाहता है, आपकी पवित्रता छीनना चाहता है और आपके उद्धारक परमेश्वर के नाम को आपके द्वारा अपमानित करना चाहता है। वह आपको भ्रष्ट करके आपकी आत्मा को नष्ट करना चाहता है। हम युद्धकाल में हैं, शान्तिकाल में नहीं। बैठकर आराम करने का समय नहीं है। भाइयों और बहनों, शान्ति का भी समय होगा परन्तु अभी नहीं है।

इस आत्मिक युद्ध को समझने का हमारा आधार बाइबल है।

तीसरा सत्य– यह अत्यधिक महत्वपूर्ण हैः आत्मिक युद्ध को समझने का हमारा आधार बाईबल है। यहां हमें एक प्रश्न का उत्तर स्पष्ट करना है, "जब हम स्वर्गदूतों, दुष्टात्माओं और आत्मिक युद्ध का विचार करते हैं तो हमारा आधार क्या है? कल्पना या सत्य? क्या हम इस अध्ययन में काल्पनिक कहानियों की चर्चा करेंगे या बाइबल की? अनुभव या व्याख्याओं की? हम बाइबल के विषय में क्या समझते हैं, वह देखेंगे। अन्तर्ज्ञान या टीका? हमें क्या सही लगता है या परमेश्वर क्या कहता है कि सही है?"

यहां हमें निश्चित करना है कि हमारा याचना का न्यायालय कौन सा है। यह महान चुनौतियों में से एक है क्योंकि परमेश्वर संसार की सब परिस्थितियों में काम कर चुका है और आज भी कर रहा है और हमें इसका लेखा देना है। हमें यह भी देखना है कि यदि हमारे पास सत्य का मानदण्ड नहीं है जिसके द्वारा हम इन विभिन्न अनुभवों का मूल्यांकन करें तो हम तरह तरह के विचारों और भ्रम में पड़ जाएंगे। मुझे पूरा विश्वास है कि हमारी मसीही बातों में आत्मिक युद्ध के विषय जो चर्चा होती है वह धर्मशास्त्र के अनुसार उचित नहीं है, वह बाइबल से अलग अन्यजाति अनुभवों पर आधारित है। यह तान्त्रित है जो शैतान का काम है।

तो फिर हमारे उत्तर कहां से प्राप्त होंगे? हमारे विचार विमर्श का आधार क्या है? स्मरण रखें कि बाइबल सब प्रश्नों के उत्तर नहीं देती है चाहे वे परिस्थिति संबन्धित हों या आत्माओं से संबन्धित हों। शैतान बुरा कैसे बना? बाइबल में इसका उत्तर नहीं है। धर्मशास्त्र में जो मनुष्य दुष्टात्माओं के सताए हुए थे उनमें

दुष्टात्मा ने कैसे प्रवेश किया? बाइबब में अनेक प्रश्नों के उत्तर नहीं हैं परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि हम आशा से रहित हैं। परमेश्वर स्वर्ग में बैठकर यह नहीं सोच रहा है कि हम आज इस विषय पर अध्ययन कर रहे हैं तो अच्छा होता कि वह हमारे प्रश्नों के उत्तर बाइबल में पहले से ही रख देता। हमारे लिए शुभ सन्देश यह है कि बाइबल में उन सब प्रश्नों के उत्तर हैं जो परमेश्वर की महिमा के निमित्त हमारे जीवन के लिए आवश्यक हैं। हमारे हर एक प्रश्न का उत्तर तो बाइबल में नहीं है परन्तु मसीह में हमारे विकास और संसार में जय पाने के निमित्त प्रत्येक प्रश्न का उत्तर है। यह अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

मुझे पश्चिमी देश का निवासी होने के उपरान्त भी बहुत कुछ सीखना है। मैं ने अभी तक बहुत सी बातें नहीं देखी हैं जो परमेश्वर संसार में कर रहा है। तथापि मेरे 50 वर्ष के अनुभवों के उपरान्त मेरा लक्ष्य आपके साथ अनुभव बांटना नहीं, परमेश्वर के सत्य को बांटना है। अतः हम वचन के अध्ययन में पूर्ण समय लगाकर सांसारिक अनुभव, कहानियों, विवरणों को धर्मशास्त्र के अधीन प्रासंगिक देखेंगे।

वचन ही अधिकार है– यह सर्वाधिक महत्व की बात है। हम अनुभव आधारित लोग हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि सबसे खतरनाक स्थानों में एक है, एक बाइबल अध्ययन समूह। सहभागी प्रायः उस समय के मनुष्यों के संबन्ध में लेख का अर्थ खोजने की अपेक्षा पूछते हैं कि वे उससे समझते हैं। और अन्त परिणाम यह होता है कि उन्होंने वास्तव में कुछ नहीं सीखा। उन्होंने संपूर्ण समय एक दूसरे का अध्ययन किया और बाइबल के विषय कुछ नहीं सीखा।

हम अनुभव आधारित लोग हैं। अतः हमें सुनिश्चित करना है कि बाइबल पाठ ही हमारा आरंभ हो। वहां क्या लिखा है? उसका अर्थ क्या है? और अपने प्रश्न बाइबल पाठ के अध्ययन के समापन तक रोके रखें। आप समझ गए न? तो फिर हम बाइबल पाठ को कैसे पढ़ें? मैं आपको स्मरण कराना चाहता हूं कि बाइबल अध्ययन में अवलोकन की प्रक्रिया है। हम मूलपाठ की खोज करते हैं। हम मूलपाठ को सुनते हैं। हम बार–बार, ध्यान लगाकर सुनते हैं। हम लेख में विभिन्न बातों की खोज करते हैं– धीरज धरकर, कल्पना करके, मनन करके, सोद्देश्य। हम सुनते हैं।

हम मूलपाठ को देखते हैं। हम उन बातों को देखते हैं जिन पर संसार बल देता है और दोहराता है तथा उनका संचार करता है। यह अवलोकन है। वहां हम आरंभ करते हैं। मूलपाठ क्या कहता है?

अब व्याख्या करना। मूलपाठ का अर्थ क्या है?

हम मूलपाठ का परीक्षण करते हैं अर्थात उसकी पृष्ठभूमि देखते हैं। हमें उनके संसार में जाना है। हमें यह भी देखना है कि सत्य को किस प्रकार कहा गया है क्योंकि सुसमाचारों में सत्य की चर्चा श्रेष्ठगीत में सत्य की चर्चा से भिन्न है। इतिहास और संस्कृति का संदर्भ देखें। राजाओं के इतिहास की परिस्थितियां प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की परिस्थितियों से भिन्न थीं।

थियोलॉजी– हम किसी भी पद के संबन्ध में कल्पना नहीं कर सकते।

भजन 14 में लिखा है कि परमेश्वर नहीं है अतः आप यह निष्कर्ष नहीं निकाल सकते कि परमेश्वर नहीं है। अतः सावधान रहें।

स्मरणयोग्य सिद्धान्तः हम लेखक के मूल उद्देश्य को देख रहे हैं। पवित्र आत्मा ने एक मनुष्य के माध्यम से किसी समय विशेष में किसी स्थान के लिए कुछ कहा। बाइबल का अर्थ वह कभी नहीं हो सकता जो पहले भी नहीं था। आप उसे संदर्भ से हटाकर उसका कोई नया अर्थ नहीं निकाल सकते। हमें देखना है कि वहां क्या हुआ था। संदर्भ द्वारा हम अर्थ को समझते हैं। हमें संदर्भ को देखना है।

यहां मैं चाहता हूं कि आप खतरों से बचें– दो खतरों से। पहला, पृथकीकरण अर्थात लेख को संदर्भ से अलग कर देना। हमें अत्यधिक सावधान रहना है। हम पुराने नियम से एक पद निकालते हैं, सुसमाचारों से एक पद निकालते हैं और पत्रियों से एक पद निकालते हैं। अब तीनों पदों को एक साथ रखकर सोचते हैं कि वे एक ही बात कह रहे हैं, समय भी एक ही है और श्रोता या स्थान भी एक ही है। यह पदों का पृथकीकरण है। इस प्रकार हम जैसा चाहते हैं वैसा बाइबल का कथन बना देते हैं, हमें एक संदर्भ का पद लेकर दूसरे पद के संदर्भ में संयोजित नहीं करना चाहिए। उदाहरणार्थ– आत्मिक युद्ध– लोग प्रायः मरकुस 5 को इफिसियों 6 के साथ जोड़ देते हैं जहां पौलुस आत्मिक युद्ध की चर्चा कर रहा है। वे सोचते हैं पौलुस दुष्टात्मा की चर्चा कर रहा है।

अवलोकन–मूलपाठ में क्या लिखा है? व्याख्या– तदोपरान्त उसकी व्यावहारिकता अर्थात मैं इसे कैसे अपना सकता हूं? यह शाश्वत सत्य है जिन्हें वर्तमान में प्रासंगिक बना सकते हैं। उस युग की बातों को आज के युग में व्यवहार करना।

इस प्रकार आत्मिक युद्ध के बारे में हमें पहले मूलपाठ को सुनना है तदोपरान्त संदर्भ समझना है। इसके बाद प्रश्न पूछना है। यदि हम आरंभ ही में प्रश्न पूछेंगे तो धर्मशास्त्र में केवल उत्तर की ही खोज करते रहेंगे और बाइबल को समझने में गलती करेंगे। यही तो बैरी चाहता है। वह हमें आश्वासन दिलाना चाहता है कि हम बाइबल पढ़ रहे हैं जबकि हम बाइबल को तोड़ मरोड़कर अपने ही उत्तर बना रहे हैं।

आत्मिक युद्ध में बैरी दुर्जेय है

चौथा आधारभूत सत्यः आत्मिक युद्ध में बैरी दुर्जेय है। वह सिंह है जो फाड़ खाने को किसी की खोज में है। यदि हमारा बैरी मनुष्य है तो हम अपनी शक्ति में उसका सामना करने का साहस कर सकते हैं। मानवीय देह में उसका जोड़ नहीं है। आप तो क्षण भर ही में उससे हार जाएंगे। इस सत्य पर विचार करें। आपका बैरी दुर्जेय है।

अब कोई कहेगा, "बैरी के बारे में भी क्यों सोचें? परमेश्वर ही में ध्यान क्यों न लगाएं?" 2 कुरिन्थियों 2:10–11 सुनें, "जिसका तुम कुछ क्षमा करते हो उसे मैं भी क्षमा करता हूं, क्योंकि मैं ने भी जो कुछ क्षमा किया है, यदि किया हो, तो तुम्हारे कारण मसीह की जगह में होकर क्षमा किया है कि शैतान का हम पर दांव न चले, क्योंकि हम उसकी युक्तियों से अनजान नहीं।"

इसकी अन्तिम अभिव्यक्ति पर ध्यान दें। हम उसकी युक्ति से अनभिज्ञ न रहें। किसी भी खेल में विपक्ष की रणनीति जानना अच्छा है कि वे क्या करेंगे। हमें अपनी आंखें खुली रखना है। हमें घुटनों पर आना है। यह आत्मिक युद्ध है और आत्मा में लड़ना है। हमें उसे और उसकी युक्तियों को समझना है। शैतान के दो मुख्य उद्देश्य हैंः 1) परमेश्वर के जनों को नष्ट करो कि परमेश्वर की महिमा का नाम खराब हो। आत्मिक युद्ध अन्ततः महिमा का युद्ध है– भजन 96:1–4, "यहोवा के लिये एक नया गीत गाओ, हे सारी पृथ्वी के लोगो, यहोवा के लिये गाओ! यहोवा के लिये गाओ, उसके नाम को धन्य कहो; दिन प्रतिदिन उसके किए हुए उद्धार का शुभसमाचार सुनाते रहो। अन्य जातियों में उसकी महिमा का, और देश देश के लोगों में उसके आश्चर्यकर्मों का वर्णन करो। क्योंकि यहोवा महान् और अति स्तुति के योग्य है; वह तो सब देवताओं से अधिक भययोग्य है।"

यह आत्मिक युद्ध वैश्विक है

प्रत्येक जाति, देश, गोत्र, प्रत्येक जीवन पर इसका प्रभाव पड़ता है। इस पृथ्वी पर 680 करोड़ मनुष्यों पर इसका प्रभाव पड़ता है।

आत्मिक युद्ध में पड़ना अपरिहार्य है

यह वैश्विक युद्ध है। इससे बचना असंभव है। हम सोचते हैं कि आत्माओं का कार्य या आत्मिक युद्ध तब ही होता है जब कोई असामान्य बात हो। नहीं, आप घर में अकेले बैठे हों या, सड़क पर चल रहे हों, अपनी पत्नी से या अपने बच्चे से बात कर रहे हों, कक्षा में बैठे हों, आत्मिक युद्ध हर जगह हर स्थिति में चलता रहता है। यह अनन्त है, भयंकर है, और आत्मिकता में पीछे हटना हार है। आप इसे अनदेखा न करें। बाइबल में यह नहीं लिखा है कि शैतान पर ध्यान मत दो तो वह भागेगा। आप ऐसा करेंगे तो हार जाएंगे।

आत्मिक युद्ध में जोखिम अनन्त है

दो सत्य और हैं: इस युद्ध में जोखिम हाथ, पैर के जाने का या जान जाने का नहीं है। इसमें या तो अनन्त स्वर्ग है या अनन्त नरक है। इस संसार का सृष्टिकर्ता परमेश्वर मनुष्यों का उद्धार चाहता है– 2 पतरस 3:9, "प्रभु अपनी प्रतिज्ञा के विषय में देर नहीं करता, जैसी देर कितने लोग समझते हैं; पर तुम्हारे विषय में धीरज धरता है, और नहीं चाहता कि कोई नष्ट हो, वरन् यह कि सब को मन फिराव का अवसर मिले।"

वह नहीं चाहता कि कोई नष्ट हो परन्तु इस संसार का सरदार चाहता है कि मनुष्य नरक में जलें। प्रकाशितवाक्य 20:14–15, "मृत्यु और अधोलोक आग की झील में डाले गए। यह आग की झील दूसरी मृत्यु है; और जिस किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ न मिला, वह आग की झील में डाला गया।"

आत्मिक युद्ध का परिणाम अपरिवर्तनीय है

यह अन्तिम आधारभूत सत्य है। मेरे भाइयों और बहनों, शैतान हार गया है। इसकी भविष्यद्वाणी उत्पत्ति 3 ही में कर दी गई थी– वह तेरा सिर कुचलेगा... प्रभु यीशु ने यह किया। कुलुस्सियों 2:15, "और उसने प्रधानताओं और अधिकारों को अपने ऊपर से उतारकर उनका खुल्लमखुल्ला तमाशा बनाया और क्रूस के द्वारा उन पर जय–जयकार की ध्वनि सुनाई।"

शैतान हराया गया है और उसको नष्ट किया जाएगा– प्रकाशितवाक्य 20:10, "उन का भरमानेवाला शैतान आग और गन्धक की उस झील में, जिसमें वह पशु और झूठा भविष्यद्वक्ता भी होगा, डाल दिया जाएगा; और वे रात दिन युगानुयुग पीड़ा में तड़पते रहेंगे।"

हम जय पाने के लिए नहीं जयवन्त होकर आत्मिक युद्ध करते हैं। इस पर मनन करें अन्यथा आप जय पाने का प्रयास करते रहेंगे। यह जानकर कि वह विजयी राजा है आप शैतान की युक्तियों के विरुद्ध दृढ़ खड़े रहेंगे और उसका सामना कर पाएंगे तथा वह भागेगा। इस पद को कंठस्थ करें– 1 यूहन्ना 4:4, "हे बालको, तुम परमेश्वर के हो, और तुम ने उन पर जय पाई है; क्योंकि जो तुम में है, वह उस से जो संसार में है, बड़ा है।"

यह सच है।

आपमें अन्तर्वासी मसीह का आत्मा उससे बड़ा है जो संसार में है– 1 यूहन्ना 5:4–5, "हे बालको, तुम परमेश्वर के हो, और तुम ने उन पर जय पाई है; क्योंकि जो तुम में है, वह उस से जो संसार में है, बड़ा है। वे संसार के हैं, इस कारण वे संसार की बातें बोलते हैं, और संसार उनकी सुनता है।"

परमेश्वर की सन्तान आप जयवन्त हैं। शैतान तो हारा हुआ है। जो लड़ रहे हैं वे जोखिम उठाते हैं। एक दिन प्रभु यीशु आकर इस विजय को पूरा करेगा और संसार से बुराई का पूर्ण अन्त हो जाएगा।

शैतान की युक्ति है कि मनुष्य को उस शान्ति का आनन्द न लेने दे जो उसके लिए लाई गई है। अतः हम यह जानकर युद्ध करते हैं कि हमारे लिए यह युद्ध पहले ही जीता जा चुका है, आज और अनन्तकाल के लिए। इस विश्वास के साथ यह कहना सुरक्षित है कि हम युद्ध के लिए तैयार हैं। तो आइए अब हम स्वर्गदूतों के विषय में अध्ययन करें।

स्वर्गदूत

स्वर्गदूत क्या है?

स्वर्गदूत देहरहित आत्माएं हैं। पुराने नियम में 108 और नये नियम में 165 संदर्भ स्वर्गदूतों के हैं। उनके अनेक नाम हैं।

सन्देशवाहक– भजन संहिता 104:4, "जो पवनों को अपने दूत, और धधकती आग को अपने टहलुए बनाता है।"

स्वर्गदूत– अय्यूब 1:6, "एक दिन यहोवा परमेश्वर के पुत्र उसके सामने उपस्थित हुए, और उनके बीच शैतान भी आया।"

सेवक आत्माएं– इब्रानियों 1:14, "क्या वे सब सेवा टहल करनेवाली आत्माएं नहीं, जो उद्धार पानेवालों के लिये सेवा करने को भेजी जाती हैं?"

पवित्र जन– भजन 89:5–7, "हे यहोवा, स्वर्ग में तेरे अद्‌भुत काम की, और पवित्रों की सभा में तेरी सच्चाई की प्रशंसा होगी। क्योंकि आकाशमण्डल में यहोवा के तुल्य कौन ठहरेगा? बलवन्तों के पुत्रों में से कौन है जिसके साथ यहोवा की उपमा दी जाएगी? परमेश्वर पवित्र लोगों की गोष्ठी में अत्यन्त प्रतिष्ठा के योग्य, और अपने चारों ओर सब रहनेवालों से अधिक भययोग्य है।"

दानिय्येल 4:13, 17, "मैं ने पलंग पर दर्शन पाते समय क्या देखा, कि एक पवित्र पहरुआ स्वर्ग से उतर आया। यह आज्ञा पहरुओं के निर्णय से, और यह बात पवित्र लोगों के वचन से निकली, कि जो जीवित हैं वे जान लें कि परमप्रधान परमेश्वर मनुष्यों के राज्य में प्रभुता करता है, और उसको जिसे चाहे उसे दे देता है, और वह छोटे से छोटे मनुष्य को भी उस पर नियुक्त कर देता है।'"

दानिय्येल 4:23, "हे राजा, तू ने जो एक पवित्र पहिरुए को स्वर्ग से उतरते और यह कहते देखा कि वृक्ष को काट डालो और उसका नाश करो, तौभी उसके ठूंठ को जड़ समेत भूमि में छोड़ो, और इसको लोहे और पीतल के बन्धन से बान्धकर मैदान की हरी घास के बीच में रहने दो; वह आकाश की ओस से भींगा करे, और उसको मैदान के पशुओं के संग ही भाग मिले; और जब तक सात युग उस पर बीत न चुकें, तब तक उसकी ऐसी ही दशा रहे।"

स्वर्गदूत क्या है? वे आत्मिक प्राणी हैं। इब्रानियों 1:14 में उन्हें सेवक आत्माएं कहा गया है। हम उन्हें देख नहीं सकते जब तक कि परमेश्वर उन्हें देह न दे।

वे सृजित प्राणी हैं– भजन 148:1–5, "याह की स्तुति करो! यहोवा की स्तुति स्वर्ग में से करो, उसकी स्तुति ऊंचे स्थानों में करो! हे उसके सब दूतो, उसकी स्तुति करोः हे उसकी सब सेना उसकी स्तुति करो! हे सूर्य और चंद्रमा उसकी स्तुति करो, हे सब ज्योतिमय तारागण उसकी स्तुति करो! हे सब से ऊंचे आकाश, और हे आकाश के ऊपरवाले जल, तुम दोनों उसकी स्तुति करो। वे यहोवा के नाम की स्तुति करें, क्योंकि उसी ने आज्ञा दी और ये सिरजे गए।"

उन्हें परमेश्वर ने सृजा है। वे आत्माएं हैं। उनमें नैतिक क्षमताएं हैं। दुष्टात्माओं के अध्याय में हम इसकी अधिक चर्चा करेंगे। कुछ स्वर्गदूतों ने पाप किया– 2 पतरस 2:4, "क्योंकि जब परमेश्वर ने उन स्वर्गदूतों को जिन्होंने पाप किया नहीं छोड़ा, पर नरक में भेजकर अन्धेरे कुण्डों में डाल दिया ताकि न्याय के दिन तक बन्दी रहें।"

उनमें नैतिकता का निर्णय लेने की क्षमता है।

उनमें बौद्धिक क्षमता है। 1 पतरस 1:12, "उन पर यह प्रगट किया गया कि वे अपनी नहीं वरन् तुम्हारी सेवा के लिये ये बातें कहा करते थे, जिनका समाचार अब तुम्हें उन के द्वारा मिला जिन्होंने पवित्र आत्मा के द्वारा जो स्वर्ग से भेजा गया, तुम्हें सुसमाचार सुनाया; और इन बातों को स्वर्गदूत भी ध्यान से देखने की लालसा रखते हैं।"

उनमें भावनाएं होती हैं– अय्यूब 38:6–7, "उसकी नींव कौन सी वस्तु पर रखी गई, या किसने उसके कोने का पत्थर बिठाया, जब कि भोर के तारे एक संग आनन्द से गाते थे और परमेश्वर के सब पुत्र जयजयकार करते थे?"

लूका 15:10, "मैं तुम से कहता हूं कि इसी रीति से एक मन फिरानेवाले पापी के विषय में परमेश्वर के स्वर्गदूतों के सामने आनन्द होता है।"

वे आनन्द मनाते हैं अर्थात भावनाएं व्यक्त करते हैं।

वे शक्तिमान हैं। भजन 103:20–21, "हे यहोवा के दूतो, तुम जो बड़े वीर हो, और उसके वचन के मानने से उसको पूरा करते हो उसको धन्य कहो! हे यहोवा की सारी सेनाओ, हे उसके टहलुओ, तुम जो उसकी इच्छा पूरी करते हो, उसको धन्य कहो!"

वे स्थान में सीमित हैं। वे सर्वव्यापी नहीं हैं परमेश्वर ने जिब्राईल को नासरत भेजा था– लूका 1:26–27, "छठवें महीने में परमेश्वर की ओर से जिब्राईल स्वर्गदूत, गलील के नासरत नगर में, एक कुंवारी के पास भेजा गया जिसकी मंगनी यूसुफ नामक दाऊद के घराने के एक पुरुष से हुई थीः उस कुंवारी का नाम मरियम था।"

वे ज्ञान में सीमित हैं– मरकुस 13:32, "उस दिन या उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता, न स्वर्ग के दूत और न पुत्र; परन्तु केवल पिता।"

वे सर्वज्ञानी नहीं हैं, सर्वव्यापी नहीं हैं, वे सामर्थी हैं परन्तु सीमित हैं।

वे अविवाहित हैं– मत्ती 22:29–32, "यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "तुम पवित्रशास्त्र और परमेश्वर की सामर्थ्य नहीं जानते; इस कारण भूल में पड़े हो। क्योंकि जी उठने पर वे न विवाह करेंगे और न विवाह में दिए जाएंगे, परन्तु स्वर्ग में परमेश्वर के दूतों के समान होंगे। परन्तु मरे हुओं के जी उठने के विषय में क्या तुम ने यह वचन नहीं पढ़ा जो परमेश्वर ने तुम से कहाः 'मैं अब्राहम का परमेश्वर, और इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर हूं'? वह मरे हुओं का नहीं, परन्तु जीवतों का परमेश्वर है।"

उनका लिंग नहीं है।

वे अनश्वर हैं– लूका 20:36, "वे फिर मरने के भी नहीं; क्योंकि वे स्वर्गदूतों के समान होंगे, और पुनरुत्थान की सन्तान होने से परमेश्वर के भी सन्तान होंगे।"

इसका अर्थ यह नहीं कि वे अनादि हैं परन्तु सृजे जाने के बाद वे अनन्त हैं।

स्वर्गदूत कैसा भी रूप धारण कर सकते हैं। प्रभु का दूत जकर्याह को वेदी की दाहिनी ओर खड़ा दिखाई दिया था– लूका 1:11–13, "उस समय प्रभु का एक स्वर्गदूत धूप की वेदी की दाहिनी ओर खड़ा हुआ उसको दिखाई दिया। जकरयाह देखकर घबराया और उस पर बड़ा भय छा गया। परन्तु स्वर्गदूत ने उससे कहा, "हे जकरयाह, भयभीत न हो, क्योंकि तेरी प्रार्थना सुन ली गई है; और तेरी पत्नी इलीशिबा से तेरे लिये एक पुत्र उत्पन्न होगा, और तू उसका नाम यूहन्ना रखना।"

वे स्वप्न और दर्शन में दिखते हैं। यूसुफ को दर्शन दिया था– मत्ती 1:20, "जब वह इन बातों के सोच ही में था तो प्रभु का स्वर्गदूत उसे स्वप्न में दिखाई देकर कहने लगा, "हे यूसुफ! दाऊद की संतान, तू अपनी पत्नी मरियम को अपने यहां ले आने से मत डर, क्योंकि जो उसके गर्भ में है, वह पवित्र आत्मा की ओर से है।"

वे अन्य रूप भी लेते हैं– दानिय्येल 101:5–6, "तब मैं ने आंखें उठाकर देखा, कि सन का वस्त्र पहिने हुए, और ऊफाज़ देश के कुन्दन से कमर बांधे हुए एक पुरुष खड़ा है। उसका शरीर फीरोज़ा के समान, उसका मुख बिजली के समान, उसकी आंखें जलते हुए दीपक की सी, उसकी बाहें और पांव चमकाए हुए पीतल के से, और उसके वचनों का शब्द भीड़ों के शब्द का सा था।"

मत्ती 28:2–3, "और देखो, एक बड़ा भूकम्प हुआ, क्योंकि प्रभु का एक दूत स्वर्ग से उतरा और पास आकर उसने पत्थर को लुढ़का दिया, और उस पर बैठ गया। उसका रूप बिजली का सा और उसका वस्त्र पाले के समान उज्ज्वल था।"

प्रकाशितवाक्य 4:6–8 में भिन्न चित्रण हैं, "और उस सिंहासन के सामने मानो बिल्लौर के समान कांच का सा समुद्र है। सिंहासन के बीच में और सिंहासन के चारों ओर चार प्राणी हैं, जिनके आगे पीछे आंखें ही आंखें हैं। पहला प्राणी सिंह के समान है, और दूसरा प्राणी बछड़े के समान है, तीसरे प्राणी का मुंह मनुष्य का सा है, और चौथा प्राणी उड़ते हुए उकाब के समान है। चारों प्राणियों के छः छः पंख हैं, और चारों ओर और भीतर आंखें ही आंखें हैं; और वे रात दिन बिना विश्राम लिए यह कहते रहते हैं, "पवित्र, पवित्र, पवित्र प्रभु परमेश्वर, सर्वशक्तिमान, जो था और जो है और जो आनेवाला है।"

स्वर्गदूत की सृष्टि कब हुई?

स्वर्गदूत कब बनाए गए थे? यह तो हम नहीं जानते परन्तु हां, इतना जानते हैं कि वे सृजनकार्य के सातवें दिन से पूर्व बनाए गए थे। उत्पत्ति 2:1, "यों आकाश और पृथ्वी और उनकी सारी सेना का बनाना समाप्त हो गया।"

इससे स्पष्ट है कि परमेश्वर ने उन्हें सृजनकार्य के अन्तिम दिन से पहले कभी बनाया था।

संभव है कि परमेश्वर ने जब आकाश और पृथ्वी की रचना की थी तब उसने स्वार्गिक प्राणियों को भी बनाया। लिखा है कि पृथ्वी बेडौल और सुनसान पड़ी थी और विचारकों का मानना है कि उनकी रचना पहले दिन की गई थी। अय्यूब 38 में लिखा है कि जब पृथ्वी की रचना की गई तब सितारे आनन्द से गा रहे थे और स्वर्गदूत आनन्द मना रहे थे। अतः आरंभ ही में स्वर्गदूतों की रचना की गई थी।

स्वर्गदूत कितने हैं?

वे असंख्य है!

लूका 2:13–15, "तब एकाएक उस स्वर्गदूत के साथ स्वर्गदूतों का दल परमेश्वर की स्तुति करते हुए और यह कहते दिखाई दिया, "आकाश में परमेश्वर की महिमा और पृथ्वी पर उन मनुष्यों में जिनसे वह प्रसन्न है, शान्ति हो।" जब स्वर्गदूत उनके पास से स्वर्ग को चले गए, तो गड़ेरियों ने आपस में कहा, "आओ, हम बैतलहम जाकर यह बात जो हुई है, और जिसे प्रभु ने हमें बताया है, देखें।"

"बारह पलटन से अधिक"

मत्ती 26:53, "क्या तू नहीं जानता कि मैं अपने पिता से विनती कर सकता हूं, और वह स्वर्गदूतों की बारह पलटन से अधिक मेरे पास अभी उपस्थित कर देगा?"

रोम की पलटन में 3000–6000 सैनिक होते थे। इसका अर्थ है कि उनकी संख्या असंख्य है।

असंख्य

प्रकाशितवाक्य 5:11, "जब मैं ने देखा, तो उस सिंहासन और उन प्राणियों और उन प्राचीनों के चारों ओर बहुत से स्वर्गदूतों का शब्द सुना, जिन की गिनती लाखों और करोड़ों की थी।"

अतः उत्तर यह है कि उनकी संख्या अनगिनत है।

दानिय्येल 7:10, "उस प्राचीन के सम्मुख से आग की धारा निकलकर बह रही थी; फिर हजारों हजार लोग उसकी सेवा टहल कर रहे थे, और लाखों लाख लोग उसके सामने हाजिर थे; फिर न्यायी बैठ गए, और पुस्तकें खोली गईं।"

परन्तु उनकी संख्या बढ़ती नहीं है क्योंकि वे जन्म नहीं लेते। अब कोई पूछेगा, "क्या वे सितारों के समान असंख्य हैं?" उन्होंने प्रकाशितवाक्य 12:3–4 पढ़ा होगा, "एक और चिन्ह स्वर्ग में दिखाई दिया; और देखो, एक बड़ा लाल अजगर था, जिसके सात सिर और दस सींग थे, और उसके सिरों पर सात राजमुकुट थे। उसकी पूंछ ने आकाश के तारों की एक तिहाई को खींचकर पृथ्वी पर डाल दिया। वह अजगर उस स्त्री के सामने जो जच्चा थी, खड़ा हुआ कि जब वह बच्चा जने तो उस बच्चे को निगल जाए।"

हम कुछ ही देर में इस पर विचार करेंगे।

मत्ती 18:10–11, "देखो, तुम इन छोटों में से किसी को तुच्छ न जानना; क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि स्वर्ग में उनके दूत मेरे स्वर्गीय पिता का मुंह सदा देखते हैं। [क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को बचाने आया है।]"

इसका अर्थ है कि प्रत्येक विश्वासी का एक रक्षक स्वर्गदूत है तो क्या स्वर्गदूतों की निश्चित संख्या के साथ विश्वासियों की भी एक निश्चित संख्या होगी? मैं इस बात पर अत्यधिक संकोच करता हूं कि हम सबका एक एक रक्षक स्वर्गदूत है। परन्तु वे असंख्य हैं और परमेश्वर की स्तुति में लगे रहते हैं। यों तो हम इस पद के अनेक अर्थ निकाल सकते हैं।

स्वर्गदूतों की व्यवस्था कैसे की गई है?

स्पष्ट तो नहीं है परन्तु हम देखते हैं कि वे करूब हैं। वे सर्वोच्च पद के स्वर्गदूत हैं जिनका काम है परमेश्वर की महिमा का प्रचार करना और उसकी रक्षा करना। उन्हें अदन की वाटिका के प्रवेश द्वार पर रखा गया था– उत्पत्ति 3:24, "इसलिये आदम को उसने निकाल दिया और जीवन के वृक्ष के मार्ग का पहरा देने के लिये अदन की वाटिका के पूर्व की ओर करूबों को, और चारों ओर घूमनेवाली ज्वालामय तलवार को भी नियुक्त कर दिया।"